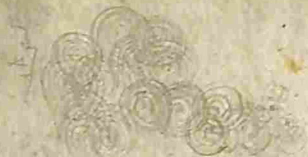


ॐ श्रीगणेशाय नमः॥ श्रीमातृकाचक्रदेव्यै नमः

[illegible]

ति विद्रुवामिति ॥ कैलभवामिति ॥ स्वमन
वामिति ॥ स्फुगि ॥ कलयति ॥ कटय
ति ॥ दिमगितिउनये ॥ ज्ञमागभाउः ॥ गिविम
कगिति ॥ मिउमिउिकद्गुठगलि ॥ वधूमम
डुलि ॥ डलिगवलयमश्लिउे ॥ कैप्रगदगठ
गलि ॥ लाय ॥ पद्म ॥ उिस्कल ॥ स्मभद ॥ भज्ञ

म: मे: ३

र ॥ पारु ॥ मधक ॥ कलम ॥ मर ॥ माप ॥ वरम:
ठय ॥ पाम ॥ पभुक ॥ कपाल ॥ पडुन ॥ गा
म ॥ भस्मल ॥ उभा ॥ वरगहृदमे ॥ दपायरे ॥
भ्रूक्रउविवितायवे ॥ मक्षिके ॥ मञ्जयवृ ॥
किरउवैसे ॥ ब्रह्माणि ॥ रुद्राणि ॥ नारायणि ॥
ब्रह्मराणि ॥ सिद्धयेविनायिनि ॥ वैसमा

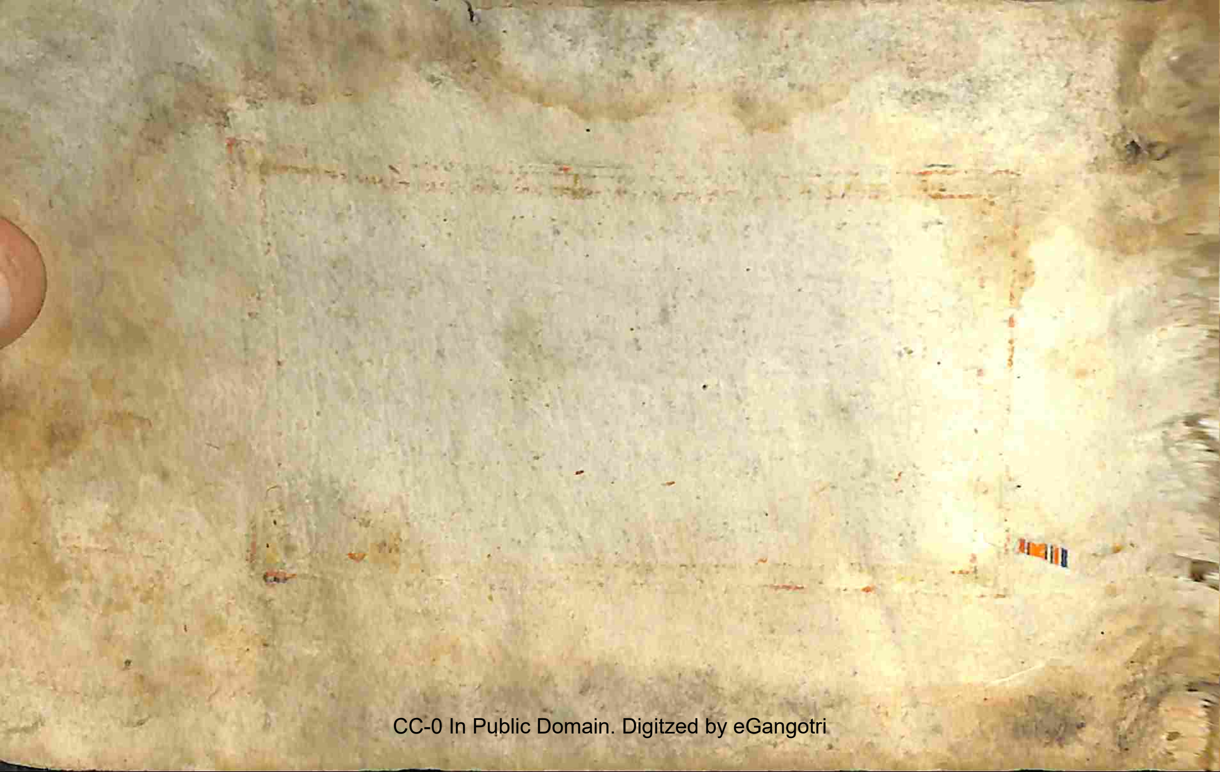
ङः ॥ गायत्रि ॥ सावित्रि ॥ सरस्वति ॥ भवापवे ॥
सर्वेश्वरि ॥ विश्वेश्वरि ॥ विश्वकर्तृः ॥ असमाधि-
विसर्गत्रिमये ॥ सिद्धये ॥ सिद्धामलिंस्वरूपे ॥
कैवल्ये ॥ शिवस्वरूपे ॥ शिवे ॥ निरामये ॥ निरू-
पाणिमये ॥ निरामयपदे ॥ रुद्रविष्णुमदे-
श्वरात्मिके ॥ भिदति ॥ त्रिधलिं ॥ हृदयस्थामि-

सि॥ सिधिरमडपुमविति॥ कलै॥ कलाश्रिमिते
कलगडे॥ घलेसिडे॥ सिंदगडे॥ ग्रेगाडे॥ येगासु
गनभिडे॥ ठकलमबद्धलै॥ भराभियकरुहू॥
मते॥ मलये॥ दिरहू॥ मरहै॥ मारिके॥ ऊद
भदयाभ॥ भूझुमिापरमीरंभाझमडेप
मेछिड॥ पीठेंसुग्रीमिलाडुपंमारिकंपूर्भ

सं. मैं. ७

भूतभा ॥ वभागोवउकभागमगावङ्गीटङ्क
कातिल्पी ॥ डगग्यपावडोमोवयादिल्पीमागि
कथुभी ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
उश्रीमातृकभेदंमभ्रूलभा ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीभैरवाय ॥ ॥ ॥ ॥
ऐरावतसुरेशियः मवेयसूर्यमवेशिवीकमः ॥
उमेदकमकरसूक्ष्मदेहयादशमिवः ॥१॥
मीभक्षनीलगाडुशैङ्कलावपुमितात्रमा
॥ मरभिदुः सुरंकृपेः समापीतेभृदसि
वमा ॥३॥ मैहटंठटकेटिकेटमजऊहेटे



[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

ਸੁਖਮਂ: ੫

ਤੇਸੰਗਤੁ ॥ ਤਿਨਕਬਿਬਿਬਤ੍ਰਿਤਸਾਹਉਬਡੀਤਸਿ
ਦਮਾਬੇਮਿਤਿਸੋਭਚਖਾਂਗੁਰਫਚਿਤੀਕਗਾਵਤੀ
ਕਲਾਮਾਂਪੀਨੋਮ੍ਰਿਤਮਾ ॥੨॥ ਸੰਤਨਾਂਮਾਦਿਖਾ
ਮਸ੍ਰਿਮਾਬਿਕੰਮਿੰਦਾਬਿਛੁਠਸਤੁੰਨਾਨਾਕੰਰ
ਬਿਸਮਧਮਾਸ੍ਰਿਲਾਕਤੀਦਿਦਤ੍ਰੇਮੰਬ੍ਰਿਤਮਾ ॥
ਨਲਾਮਸ੍ਰਿਮਕਤੂਕਪਰਮਂਨੀਸ੍ਰੀਮਤਗੀ

ਵੈਸ੍ਨਵੀਸੀਹੁਪੋ੍ਤਾਤਾਡ੍ਰਿਭਿਦਰਕੰਗੀਡਲ
ਭਾਂਗੀਗੀਮੁਦਮਾ॥੫॥ਮੇਵਾਸਾਂਢਯਸਦਯਕੈ
ਸੂਕਵਿਗੀਭਮ੍ਹਤਿਭਮ੍ਹਸੁਖਾ॥ਤਾਤਾਮਸੁ
ਦਾਗਿਧਾਬਿਦਗੀਤਿਸਾਫਭਫਕਿਤਿ॥ਭ
ਰਮੈਪਿਪਰਾਲਿਤਿਵਿਕਮਿਤਿਡ੍ਰਿਰਜੁਗਵੀਦ
ਵਿਗਿਦਰੈਵੰਭਵਲੰਧੁਮਤ੍ਰਵਸਾਂਡਲੰਭ

ਤਿਸੰਘੁਣੀ॥ ਤਿਦਰਬਿਕਿਬਤਿਤਮ੍ਹਤਬਤੀਤਮ੍ਹੈ
ਦਮਾਭੇਸਿਵੀਸਚੈਧੰਨੁਰਜਪਿਵੀਰਗਾਵਤੀ
ਭੁਲਾਭਾਪੀਨੈਭੂਦਸ॥੨॥ਸੋਮਰਾਤੰਭਦਿਖਾ
ਮਰਸ੍ਰੂਭਤਿਕਿੰਜਿੰਦਪਿਛੋਠੰਸਤੁੰਨਾਨਾਕੰਰ
ਵਿਸੇਖਸੀਾਹੂਲਾਵਥੀਸ਼ਦਤ੍ਰੇਰਸੇਂਕ੍ਰਿਤਸਾ॥
ਗਾਲਾਭਹੁਭਕਡਤ੍ਰੂਪਰਸਲੀਸੀਸਤੁਗੀਟ

वैष्णवी भीरूपे ~ लाराडिभिदरकौंडल
भांपीनीभूद्भा ॥ प ॥ मेवापांरुयरुयकै
भकऽिवेभम्कतिभम्कमुखा ॥ गागमह्‌
वतितिपूपाविदगेडमरुमफ्‌क्विडे ॥ भ
हूभेपिपरालिडेविकमिडेड्वेरद्भवीर
विशिदवैवंभरलंधूमत्रवसांडलंभ

ंपेनिभूदमः ॥ ८ ॥ मेमारालवशणि॰नीरवि

मसिकेणिभूकंभभूकंपापाऽक्तसिवाणिंनी

नादरवड्मसिकैः मेभुऽभः ॥ क्ततिहूभ्य

विनसिवीभरशिंहहूंदरत्रेीहूमभङ्गः

नडुमऽःकविहलोरंवीऽलाभंपेनिभूद

मः ॥ ९ ॥ रडपङ्कनामांसीमरदः भ

रा॰मं॰ ७

वंपरमा ॥ वद्यजलंयः पठतिमेकीस्तुं सि-
द्धिमाप्नुयाउ ॥॥ ५ ॥॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

इति श्रीरुद्रपञ्चकविधिंनामस्तुलाभिइंसम्पू
र्णमा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

[illegible] ॥ नमः ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ १ ॥ [illegible]
[illegible]

उद्यःपद्धति॥ किञ्जल्कपादरागभृङ्गमधुर-
उर्ध्वंगगल्गीभक्तकगावत्तीलत्वतीवन्देहरिं॥४
॥ ब्रह्माद्यंयत्नीयमानशुद्धलक्षणमहितदं
मृद्वीविद्युद्भूमिभिर्दिव्ययाममा॥ पद्मं
त्रिकपृष्टयप्रतिप्रतिद्वात्रिंशल्लोमकं
विन्दयाम्भममेवकण्ठ॥७॥ तम्बैविदय

३

स्वगाह्निवरिंधिवेडियेनाह्निमविरविभङ्गरि
भक्तिकते ॥ उठपन्नेरमपिकभमिकाणि
गभृङ्डंवरेउभ्मिनरलेकभापपुरुडेभर ॥
र॥ मार्गिरिनायमनमकत्रुरभगरुपंयघर
भद्रमनापगुलं ङ्किगीए: ॥ रमेमघमेभि
यगिवाङिविणरनसेनाङ्गीवरेउभ्भृमरा॥

गस्यश्रिकुं स्वाहा ॥ ५ ॥ वक्कधठधवललमेरुउ
मः धुमाते समुद्र विठवठयविपस तेठके ॥
यात्रेः सिपाद्र विडमन ... मनमदेशस्री
मनङमन ...: धु ... माधुकं स्वाहा ॥ ६ ॥ कह
पिरल्लि वमठगृविविः श्रुठपंठवक्कमभि
लकिमं स्त्रिडमत्रिविनवस्वा ॥ मधुलिधवुमा

यपाएनसटदेऽसंभूकं येऽभूमा ॥ ठवठर
पित्रः ॥१॥ पत्रि ह्रलोकपति वैठवभाफ़ता
त्रिमेवाणिपिपिवत्रपट्टत्रकरमति ॥ यन्मूलम
त्रयवयेगविथेगाठवाम्हल्लीमदेपपफ़ता
त्रंवभामि ॥३॥ रिक्रावभाषुमणवेवयफ़तीय
ठक्रिमित्रामा ॥ विविफ़णाठिदमह्लकेम ॥

रा रा वि का ठि म उ मि ड्डि कु रं म त्र ष्ट्र रा ख्रौ र

मा मि ठ व का गि पि उ ति ली उ म ॥ ९ ॥ मे हृः

म म्मी म द म गौ ज्ञ म ज्ञ ह्रा ला गू म्ह से मि उ क

र मे र ल्ल म वा भृ व ति ॥ य द म ये ः म त ड पा

ड्रि उ प ष्ठ प्र ए भ्रुं म म ग्म म त्र ल्लिं भु ॰ मा

मि रा ख्रौ मा ॥ १० ॥ ज्रि म्रे पि प्र व म त ड म उ

[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ॥ ७० ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible]

॥ ७३ ॥ प्रलब्धिमसकन ˜ का ˜ मञ्जिपस
मृदमद्रुतैकगावत्रिभूतवेचतव: ॥ अंमाग
पापपात्रैभुवनविधियमुक्तयाममीयन
मयादितमत्रितिमद ॥ ७३ ॥ सीवं: भूडपड
ननमदडं भूय त्रियद्वृत्रि त्रिवनवत्रिभू
तवामृतवात ॥ पनमृकमृ मिममपिवि

त्रिपालभौलेराज्ञोदयायमतिविंधु॰॰॰ भाष्व
ते ऽभूत ॥ ७० ॥ मेघवर्णमीदितुपयिकरवक्षु
रेवक्षुत्रिशिमाश्रिम्पदरऽभूदेव ॥ क्षम
कवैतिविवदंरयरऽड्विगामंराज्ञीहिलिकाल
नीपल्वाविविलम्बैमा ॥ ७१ ॥ वेर यम्ब्हि
कमलपृष्ठवः पयाहिपुत्रेमहइरययात्तद्वृत्ति

दे॰ मा॰ ३०

मिङठवम॥ मिडुंघ्रुठज्ञनयपरैठलाउेज्ञ
रबंगाङ्लीममभ्रुगिधुविमलगायवृत्रे॥ ०
१॥ क्रुमीयत्रीयनयनगाङ्कलप्रउमेदेमडुं
विरिधविमदउेमल्ि मत्रुरे॥ किधुंदिमं
वरनमे॥ त्रसंकोरेविगाङ्लीममाङ्गरवर
ज्ञउवाछ्विउेन॥ ७॥ मिडुरवाधृउटमत्र

७

र्वाभयस्थानीवा ॰ दह्रुठ्भ्रकाअमभारमः
श्रः॥ येगीभूय गिविलेयंपगिलङ्कठवा
क्षिपारंगाङ्लीभग्नश्रुकठउतिंधुममडभह्र
भा॥१॥दलादलंभ्रगिगिमेविमपाउदी
रमाकिंअकुर्व गाउभञ्जिरउभरेश्रः॥यक्ष
मगमउठअधुठ्वाक्षुभामञ्जश्लीधुउगय

गी॰ भ॰ ०३

इमंमतिभागगमभा ॥ २९ ॥ अपविपिक
वतियत्न~कोइवेधमत्तेरवागमसमाइड
यमंयोडेपि ॥ श्यामीयकज्ञलनवाछिइम
नमहाभाभवमह्नमलवंविमणाइगङ्गी
॥ ३० ॥ नमस्त्वरद्वमरा~भूवरभूयभूशारा
भूरुपाविवतिमयमभूमेन ॥ वीदरगमि

ल. मं. ०३

रक्षिणीं ब्रह्मणाराक्षिताः मामरुद्रं लेहितागतुं
विमलाडुरक्लीं ॥ ३० ॥ श्रियं श्रियंकमल
लयममम्बदधूवर्णवरमाविमलारिता
देभूषणा ॥ मेरुशृंगेरुद्रसकलिमममविरूप
रक्लीमणाडमूलममेरुभिमाझमरूमा ॥ ३३
॥ दिव्याम्बरमम्बैभिविमाम्मरुंडंभय

रवंयस्तिकिवद्मर्नभोग्हलेममभ ॥ श्वप्रोपिर
स्मसतिरद्धयनीयामिदं राज्ञी भ्रकज्ञानार
भज्ञलसलुप्रतिहमा ॥३७॥ मेदुंयमीयमर
किवाच्छ्रिरस्तंपतिक्रमहः पूठवमदिउः स
दीयरुया: ॥ पञ्चोठवदमरवाद्बिलाभिर
वीनं स्वचारपापमलनं विमलपाउराज्ञी ॥३८

॥ गीकृष्णहरिः मत्तमदमत्तत्तमेत्तयेत्तलभां
त्तलयित्तक — मधुमत्तः ॥ गन्धेत्तघविदम
विभ्रमपदविगीदत्तलेविरतायेत्तमकलक
रीलीभा ॥ ३४ ॥ भङ्गीकवस्तमलप्रचमकम
मेघमत्तेणिगामूयपपामरठत्तिरत्तत्तः ॥ म
त्तकमविमरत्तखवदिमत्तवात्तत्तरमत्तकंति

रा॰ भा॰ ०२

रूपमंस्युलानसूराज्ञी ॥ ३७ ॥ रक्षिमदस्रकि
र--सूकरलपक्र्मेमिध--दिमकरसूर
रुमिविक्रमे ॥ कवेद्रलसूरउयघ्नराज्ञी
मेवराज्ञीविपरुरुमवीपु--भार्गमृदंड ॥
३१ ॥ गायत्रिमचपरा--लीपाकरुरभवितंम
पवदरि--लीरयवामप्रद: ॥ देमायवयस्र

तिरमद्धारमङ्गदीनंरक्षोभ्यराभिमरवमाह
रिडपर्दरे ॥ ३३ ॥ व्रदयमञ्जनविपाबुर्धि
गर्भोद्भः धृर्ध्व भूगात्रु दारुकजकसमध्व केदं
॥ राक्ष हकल्प्रार्वज्ञ्र उरवमत्रिरक्षोवप
दमविधड्ड्रडकहवषेः ॥ ३४ ॥ उविधार्त्रि
नीराश्रपलेकपेरूयेरकहरूकरकातितिमि

रा. सं. ४५

डुयेभ्रु॥ यः मचमठणाडिरञ्जिउवाञ्जिय
गंमङ्कें मभाद्रूकमण्ठवमधूमत्रू॥ ॐ॥
मभीकरधूकरमजिगणयथभ्रूः धूञ्जि
श्रुरममत्रणाः धूममडिठञ्जः॥ यः मधूः
यडिकनकहिगदणिपहूंरञ्जीठवमणिपि
ललिकदिडमटेव॥ ॐ॥ मवालयामपिप

ं पद्मभाभरतिकस्मौ दिममभलेद ॰ ॰
ष्पदपक्षाः ॥ प्रहुत्ता विश्वसौयपद ॰
विमडडूपञ्चदूवडभा विकचवायराज्ञी
॥ ३३ ॥ वीडूवभुविवदृभ्रदयारुडय
डपद्भयैलाराउयाठलाॅउपुञ्चभाः ॥ ना
मयठविलासरपुकाम्बुराज्ञीकल्ला ॰

ग.
मु.
७१

द्वितीयमहाज्वालाग्निविश्वो राज्ञीकरेश्वभवत्री
वभभूधमह ॥ ३१ ॥ दण्डवैलोक्यविजयभद्रो
गफकेमदभ्रूभिमहागविलिकिरभद्र
[illegible] ॥ लक्ष्मीपतिकल्पवृक्ष [illegible] पूर्णकल
श्रीमान् यथावसुन्धरा [illegible] ॥ ३२ ॥ ग
[illegible] महागीतयज्ञः य: प्रवा

ਸਤਿਯ ਮਾ ਤ੍ਰਿਯ ਮਾ ਸ੍ਰਿਖੇਵੇ ॥ ਠਵਛੂ ਠਤ੍ਰਿ
ਬਿਖਯੰ ਕੁਲ ਤੇ ਆਪ ਵਡ੍ਰੀ ਲ੍ਹ ਤ ਪਿਲ ਠਯੰ
ਖੂ ~ ਮਾ ਮਿਰ ਸੁਨੀ ਮਾ ॥੩॥ ਤ੍ਰਿਗੰ ਸ੍ਰਮ ਮੁ ਯਿ
ਮਤਿਲੰ ਕ੍ਰਿ ਤ੍ਰਿਯ ਸ੍ਰੁ ਸਾਮ੍ਰ ਮਾ ਸ੍ਰਵ ਮਠੁ ਮ ਪਿਯ
ਤੁਤ ਮਾ ਮਹਾ ਤ੍ਰਿ ॥ ਸੁਨੀ ਮਮ ਮ੍ਰ ਮੁਗੀ ਤੁਪ ਮਹ
ਸਿਖ ਗਾ ਲੰਕ ਮਜਾ ਸ੍ਰਿ ਬਿਕ੍ਰਗ ਮੰਗੀ ਮਤੁੰ ਮਾ

ए·
भ·
०५

रमि ॥ ३२ ॥ श्रीवज्रतीवज्ररक्षवयतीयस्याधि
पीठप्रथमांशुमणिनाथमूलस्थूलीबः ॥ क्रो
मकालनयनालमयुमेदाङ्गीपुभाग
भमांपीपु—मभिदन्तभा ॥ ३३ ॥ सुहृप
गपातिस्तध्रुमाणीयहुस्त्रलैस्नप
तिस्तुधरःपूयाणु ॥ रत्नोकतोयविता

किङ्करकीतिकङ्गसवेहूंत्नसयमत्रिदि
गत्रकम्पम ॥ ८ ॥ रह्लबिभजगाउकउ
करवलभ्रुयधसपक्षणवतिलगाउभूमि
दु ॥ रह्लीभपगउरमष्ठउकह्नठरसदे
सवरलेमिपंपू भमितिहभ ॥ १० ॥
गेदेलयैवगतिमेतियसङ्गिरमःपञ्चः

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

धूर्जटेमर ॥२३॥ पञ्जरदक्षणोपव
नेत्राय पूरभोयमडिप्रथगनमधुराय
कीनामलेकवंलविहेभमदमक्रिराघू
मनुकमत्रिभुपाम्भदेवाय ॥२२॥
नानामिविलयमेत्रिकवछिणवेयवय
मत्रिंवतिरुश्चरठवयेगाय ॥ भद्रसूक्त ।

८

रः
भं:
७:

इमनमः भगवंभ्यरामितभ्याग्वदेपरमश्री
गयेसिमिगरूः ॥२८॥ इगगांविपवृत्रिमाय
मिकंकंकमंर्यागमानविविमहाद्विरवि
यशूः ॥ पापदयायविलभ्रविकवेभूः
दंउमूस्तीपनमभ्रलायवीविह्निउवेरपञ्च ॥
२९ ॥ वेश्रीउनदनोंउममभ्रग म्रापानोंयः

ननपङ्कलायूनापू॰त्रिपुरश्रमा ॥ क
म्लीरपाक्ति॰तमवेरास्त्रितधूत्रिधुंवधेमृवत॰
तमपैभृदमखणाम्लीम ॥ रा ॥ मिष्टा
वयंपरिरैचित्रिणयभुभठ्ठियस्लैहियावि
न॰ख्नुलयझमेतः ॥ मह्यंयस्लिवि
तेमुठकमनयंनाम्लीपमञ्जयनालेम

र॰ मुचामि ॥ ३३ ॥ कगीरह्रीम लिलमत्रु
तिकगकुपाउपपुक्रतिमपियंगुमिउंन
मऊ ॥ ३ं दलयाम्रपयाउिम्द हिरवय
शूगड्गीमदस्तिउठमपाकरेउ ॥ २७
॥ गफम्लातिमम्समांउिमिवालयांके
वशूम्ववसूमसिरि॰ कीतियशू: ॥ पा

[illegible]
[illegible] ॥ ५॰ ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible]
[illegible] ॥ ५० ॥ [illegible]

ग.
मु.
३३

मतेविपश्चित्कः प्रविदत्रिविधाव्यवेदरति ॰
भद्रायः ॥ पाश्चभूतात्म्ययुगात्मात्मा रूपव ॰
गल्लुत्रयान्तीनउरम शरेविकंपडाभि ॥ पञ
॥ धाङ्गुर्मो विपालभ्रूप्रभूदड्डत्रमदे: भ्रु
गीकोरमन्यपन्यकौरे: उभारः ॥ यो ड्व म
मप्कवपधीपाउमपुमभित्रिवादतिवर ॰

𑆪𑆇𑆑𑆘𑇀𑆚𑆑𑆪𑆮𑆴𑆫𑆱𑇀𑆡𑆵 𑇅 𑆥𑇓 𑇅 𑆥𑆣𑆁𑆢𑆴𑆒
𑆱𑇀𑆡𑆴𑆫𑆮𑆥𑆾𑆇𑆣𑆁𑆩𑆩𑆼𑆢𑇀𑆫𑆁𑆩𑆢𑆼𑆒𑆥𑆴𑆤𑆠𑇀𑆫
𑆢𑇀𑆫𑆪𑆣𑇀𑆫𑆴𑆩𑆼𑆮 𑇅 𑆱𑆮𑆳𑆫𑆶𑆠𑆑𑆳𑆢𑇀𑆫
𑆣𑆁𑆤𑆳𑆪𑆳𑆁𑆤𑆱𑇀𑆡𑆵𑆮𑆴𑆤𑇀𑆩𑆪𑆇𑆑𑆘𑇀𑆚𑆤𑆳𑆩
𑆪𑆁𑆩𑆳 𑇅 𑆥𑆶 𑇅 𑆫𑆩𑇀𑆑𑆩𑆳𑆥𑆴𑆑𑆮𑆝𑆼𑆮𑆩𑆳𑆥𑆪
𑆤𑆼𑆪𑆩𑆑𑆴𑆮𑆳𑆪𑆮𑆴𑆝𑆮𑆱𑆼𑆤𑆑𑆚𑆂 𑇅

ਮਾਣਸੁ ਪੁਚਾਵਣਾ ਰਮਾਤ੍ਰ ਸਮਬ੍ਰਿਹਤਿਰਾਸ੍ਰੀਵ

ਸੁਲਯਤੇ ਸਮ੍ਰਿਗਤਿਡਤਿਹਮਾ ॥੫੫॥ ਮਾਤ੍ਰੰਪ

ਸੰਸਭ੍ਰਪਯਤਿਸਬਜ੍ਰਿਬਤ੍ਰਸਮ੍ਰਬਾਬਤਿ

ਸਸਧਿਤਕੀਤਿਨੀਲਾ: ॥ ਯਿਤਿਹਸੇਸ੍ਰਬਾਤਿਤ

ਬਾਡ੍ਰਿਸਸਤ੍ਰਕਸਦੇਰਾਸ੍ਰਿਮਾਤਸਸ੍ਰਠਧ

ਤਿਧਾਦਿਸਾਮਾਮਾ ॥੫੬॥ ਚਗਧ੍ਰਕਾਮਯ

सिठीप सिविवठीपूयकहयिवंसदति
पपपपरुऋपड्डिभर ॥ हकहिंवकिरतिक
ऋलएलभड्डैदिविभुभभभपू
रम्रूरल्लौ ॥ प२ ॥ रङ्कसिविल्०त्रिपरमर
लपररहूविश्वभ्रसिसिरभ्रंविलभक्कि
मीएभर ॥ पसिद्यठीयमर भ्रररयध

ओं गाह्लौं हुं गापदेतुयेभू-- मामिसिद्धम ॥
पत ॥ वियाभिदतं तभवेद्धरित--श्रमा तु क्ष
मक्षेक्षेरतभाद्गुपुतरामिदमयाक्षिसंवे
दिषरासिः भवमेत ॥ षक्षिभिद्गुमरवमी
रतिविपादेतुचमिमेदेवत्रपभृपदिरुत
क्षेकैवमभदराज्ञः भवेतिमितः ॥ ५७ ॥

ग॰
भ॰
३२

ऊ त्रिम्री प न्हि ऊ ल क्ष्म के र वि र मि ऊँ म फ

ग ह्री मु वः म श्रु लृः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

वि र मः म र श्रु है ॥ ॥ ॥ त्रि मि ऊ व लृ ल ।

क्ष्री म र श्रु त्रि म म मु वाङ्म या ण र ॥ क म ल

ण म म म व ग ले म ग ण क्रु ण व ले र म स्रु ह ।

मं॰ भा॰ ३५

मा ॥ ० ॥ एतत्स्कन्धवल्लोके भगवत्प्रतिष्ठम्भवः
स्वभावग्रहः ॥ यत्र भगवत्कमललोके स्तव
सर्वज्ञलोके ब्रह्माभि ॥ ३ ॥ कस्मै विना
विवेकविवेकविकलस्य निष्फलं ज्ञान
॥ ३ ॥ अज्ञानस्य उत्पत्तिं भवति विवेके
पि ॥ ३ ॥ लज्जावाचापि यत्र धः स्मरः भक्त

गोपिकमर्मंस्थपः ॥ कथंचविचरमक
यंधत्रिकहमलेद्वयुगाजिः ॥ ३ ॥ भातिम
वणभावनोयेभाद्युत्वापिभावेमदः ॥
तिःमेधमाभ्वद्धवमद्दृष्टणंदेहवति ॥ ४
॥ ञवलयमदमेःद्राणवेद्मतिविलभ
त्रिज्ञमकरणमृः ॥ यावदमिगल्नवधेन

सं रु धु मि त्रि वि क वि रा भा ॥ १ ॥ ति ह्व ः
रे रा ण क्र भ ऋ न्द्र ज ण वा ति प्र म ध ब ल
मन्दिरः ॥ यस्य पादाब्ज भृंगत्वमागतः
ठलं स्तु ॥ २ ॥ श्रवति ज्य पि के शु दि न ण
देव भ गु त्रि रं मीः ॥ नं भ धु ठ व श्रि त्रि
भ व के पा त्रि वे ठ व श्री भा ॥ ३ ॥ स हु प

गी॰ ३३

ङ्का॰ श्रीकण्ठाय: श्रीउमिग्रिलिव ॥ ३व
दिउवद्रिभुमर: कविरणिलयउभूवण:
॥ त्र ॥ म॰ मैवमक्रिग॰ लिदवङ्काठगा
स्मिग्रस्थायी ॥ मरश्रुतिमाङभुम्हक्षवण
उपायकम ॥ ०॥ ॥ ॥ ङतिश्रीकालिका
मनउमरश्रुतिभिदंमप्रलम ॥ ॥ ॥

पिचमिविऽभ्रहगावृहे ॥ ३ ॥ विमंभरभ्रगग
रभभूरु ऽ कभगंणमरवंहरुकहलंव
गंमिड्रिदऽभ ॥ वैदूरदरहभ ऽ काछ्रव
गहगेगंवंपेभिपपपमभगेवरफंविऽ
भभ ॥ ० ॥ मभ्रूलमहूवमगंकभलेफ
रहंवगदगेऽवपूधंभरकेऽग्रहभग ॥ व्रू

वि. मुं. ४१

ऱ्खुगंदगिपरुमठयभूरु ह्रीं ह्रीं मिपा
पमभंत्रीवरारुं विड्भूभ ॥ ३ ॥ वाउरयाव
यरुगीरुमरुवरा ॐ फः षिडयाडिमभ
गीपरलिकणश्रीभू ॥ फधुद्वयाभकलभ
गलभाराक्रुं ॥ ह्रीं ह्रीं मि ॥ ७ ॥ बृह्मरुह्मा
— मिडुभराभरेह्रैंदभूयउकारणदीउः

कि॰ सं॰ ३३

बाल्हमाला ॥ कत्रिभसं भाररसौपालिक॰
नंडी ॥ वं वी मि ॥ ॥ १ ॥ कज्ञोत्रि रामनकगीकम॰
लायरावीकहैलढेनभलिलिमिधरमव
गाम ॥ वक्ष्वयेरयनमङ्ग्वराद्भ्रवं ॥
वं वी मि ॥ १ ॥ ओं नौकितिरा॰ शिरैमदया॰
भयांतिगाभ्रयागागयवैमिधपक्रगाहै ॥

प्रडभल डिपरमा मृ उेयरूपं ॥ इंदेमि ॥
१ ॥ पाडलप्रलविठवेम्कवम्कलठेरूमद
मिंकठावेडमभिमेवारे ~ ॥ मोठशूरूंड
दिनमभृकलात्रुरूपं ॥ इंदेमि ॥ १ ॥ यवेंभ
ठडमभयेमडउंम्दरत्रिठवधलडमनमे
डविभेकालक्षीमर ॥ उधंयमराठवाडिसिम

विं. मं. ३३

लकीतिकत्रिभुंवेभिफपपमभसींवरफंवि
श्माभ॥३॥वेदप्रइभ्रुणकरभफवक
लमविडभ॥भीवपम्मभवंफवीविडभ्रु
मांमृये॥त॥॥॥डत्रिमृविउभ्रुध्रुकंम
श्रुलभ॥॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ਸ੍ਰਿਭਗਤ੍ਰਕਗਵੁਦੈ ॥ ॥ ਤ੍ਰਿਅੰਮਾਗਲੁਵੜ
ਸਿੰਲੀਤਤ੍ਰਹੁਤੁੰਪਾਪਿਾਯਅੰਦਾਸਿਲੀਸ਼੍ਰਤੇ
ਦਾ~ਕਸਿਲੀਦਰਾਲਿਏਤ੍ਰਾਏਗੁਮਙ੍ਹਸਿਲੀ
॥ ਤੁਪਿਹ੍ਰਾਸਿਵਿਨਾਸਿਨੀਰਵਰਵੈਮੀਲਮ੍ਰਕ
ਕਸਿਲੀਦਿਯਾਙ੍ਰੁਨਤਰਕ੍ਰਿਲੀਭਮਤ੍ਰਠੰਕੇ
ਸ੍ਰਿਲਵਿਭਾਸਿਲੀ ॥੦॥ ਵੁਦ੍ਮਂਪਾਪਾਦਰਤੀ

सं. मं. २

नमितमिमिणाऽवह्निभहाभयत्रीधृशुक
दपत्रीकतृकमितिरदगाङ्मेलक्षलत्री
॥ देव्लीपधुलं ओंभंदितिउमयमध्रीतिकठं
ठः यत्रीपर्वविंप्रयत्रीभवनगागमतिद
वीनः स्वाहा ॥ ३ ॥ भक्ष्मदउक्तत्रभृठवृठं
भतमतिरभितमक्ष्लिभालंश्रावेः भि

दृंगानाक्रमयुगविगलज्जङ्घाभङ्गपि-
ङ्गभा ॥ भायेधृउम्दनीरंजमत्तभभमय-
क्षुत्रगीरभ्रगीरंपायान्त्रेनमदम्र्हः कनिभ-
करकरग्रत्रंदभान्नः ॥ ७ ॥ श्रेणिवनिपि-
उभदन्प्रूनियमहाषायानपाट्टुणलंपञ्चाय
नगमायिनैठगावउः पनिमकेपावनभा ॥

क्ष्य:मधुणाहविक्रुप--म--णाक्रिमदये
नियेकनूकिखिधनामिनेविणयउंनाक्ष्मत
नेदानिर्लो ॥ २ ॥ चक्रिवविधवल्लीपापापम
धूविष्क्रमममभवनमोलेमूलडीपध्वमा
ला ॥ णायेडिलायपडककपूमोभेदालक्ष्मः
कयिउकलिकलक्ष्मएफवीनःधनाउ ॥ प ॥

गं. मं. ७०

मैलेमृघवङारिणी विलललेमक्ष्लक्ष्लेनेङ॰
रिणीपागवाविदारिणीठवठयमृणी॰
मम्हारिणी ॥ मेघादेवङ्कारिणीदलाल॰
मल्लीमलकारिणीकमीधूढ्रविवाभिनी
विलोयहगङ्कमवेदारिणी ॥ ७ ॥ ठावरिउ॰
क्षरीहेरीगमाङमवेदं विगाउविषयमक्षः

रुद्रमावर्तयामि ॥ सकलकल्मषकङ्क्षमुक्त
सक्षेमभक्त्युरलसउरउरक्ते मेधिविरक्ते भूमीरु
॥ १ ॥ देवि गिरिमिलसतीपुष्टपुरं वदत्रीलल
लसत्रयप्पपउत्रीपाउकं मारयत्री ॥ सदउस
पत्रयत्रीमञ्चरामहृसत्रीदरउस्तरिउरमि
भासकं स्व: सवत्री ॥ ३ ॥ कैलासे सप्तरत्नमि

गं. सं. ३३

धृन्दगगाहस्तुहकेहिलुंत्रुः पिलत्रुः पि
लभत्रुः मिमिरमिापशि मापलात्रुः पउत्रुः
॥ पपंभत्रुपयत्रुभुदिरकरकरभालिभा
लिलयत्रिहयत्रुंवा पिधरमदिउठयदरा
हफवीयागगागाभा ॥ त्र ॥ भाउः मैलभग
मपद्विवभणमङ्गुरदरावलिभ्रगोहिद

CC-0 In Public Domain. Digitzed by eGangotri

गं. मे. ३३

वैणयत्रिकवंशीकणीरषिधूजये ॥ इतीदंव
मउभुमभुपिवउभुद्वीमिदाभूदाउ:द्वाम
भाउभुदपिउदामः भूदमणीरत्नय: ॥ ७ ॥
इतीउदकिएतुरपीउगाङ्गविदद्विवाद्व
तीविनकतुकतिशिवंभद्वियवकसुप:
॥ वैवटूउमदवभिवुपाषणसडपाॐ

१ क्रूरःस्ममममम्यैरिवरिडलब्धुस्पृहिक्र
पतिः ॥ ७० ॥ कर्कैर्विभ्रुपिंखूढिःकवलितु
गोभप्वकठिक्ष्युदिरंगैश्उठिम्रलिंउएडुमिः
लिंउवीमीकठिगंध्रेलिउभ ॥ भिन्नमूीकमम
नममभमभमदंभ्रवीपूमाणःकेमदृदैदंपर
मंस्रवगिरिपवगाकमीरवििःखुंवपः ॥ ७१ ॥

धापापन्दितिद्वतितुतिउरक्षणतित्रधुमाति

मितितिलउनविमति ॥ नङ्कुकतिद्वतिथ

मतिलपन्दितिगाङ्गेधुरउमउउमठकतिवा

ति ॥ ७ ॥ गाङ्गेइलिङ्कुभातिमकलमरवत्रणेउ

विभीलुथियेपरैवुद्धस्वउपन्दितिमर॰रं

लिन्दिलि॰स्वनभाजे ॥ धायश्रिंइयरत्रेउव

ग्रं. भ. ३२

ललकविकवृक्ष्मदहद्विपापैकमुंम्रेउंम
मञ्मुललागाद्यध्यन्दरेद्विविगाङ्कपूमीघ ॥
वर॥उकुपक्वीउरगाउगः किपिवावनेव
डीवैपात्रेपगाउमा ~ ह्नमम्तत्वामदिङ्कः
॥वत्तहृउपविरलगालह्निह्नि नीवि ~ मि
मंवारभ्मीतिम्हमरमरमरुड्डीलिउकमि

गं. ३५. ७५

पालः ॥ ६ ॥ यक्षकुलउभालभालभरलग्रा
लिलवूह्लीलउष्मुवंप्रदकाभुउपरदिउम
ङिमजगमिक्ष्लुलभा ॥ गाहुवभरामिडुकिवर
वधुउक्नभुनाम्हीलिउभा ॥ भ्रानायधुम्बिवा
भांढवउमेगाङ्गंलालेतिमलभा ॥ ७ ॥ वेभ्रुं
माध्रुउैमदाध्रुःपउत्रेयेद्धमयाभेत्रभयग्रढवा

सू॥ येसुपीडतेऽद्रयीऽभुवम्कैमाऽज्ञेयेभ्य
कुयेमडउम्ये॥७२॥ वाऽंकेवाद्रिमवेदाद्रिमग
तिमरा॰भूउभ॥ डिधवारिमिरज्ञाद्रिपाप
दाद्रिधवडभाभा॥७३॥ वाऽंकेभुवंप॰डियः
मरयाभ्रुकडेवाल्मीकिरः विश्वमिंडेस्तुक
ऽंभवक्षः॥ भृगवालूकयकलिकल्मधभ

अपक्कंभक्लिंलठंत्रपउंभधनठवङ्की ॥ ॥ ॥
०त्र ॥ ॥ ॥ ङतिमीवल्मीकि भविनंलठउंग
क्ष्मैङंभभ्रलभा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
मठंठवङमवलागाङभा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

ग. मं. ७१

ि श्री ग ले सा य र भः ।।।।।। नमे मद लह्रूँ ॥
िष्व ग मुउ क म ॥।।।।॥ डिमाउग्रमा मिकम
लिकमल यडाकि मी विङ्कलकु मलवामि
विविङ्गमाउः ॥ बी रेमणकमल कैमलगा
कि गि लङ्घि धु मी मम ... ड्डुं रम डं मा रट
॥ ० ॥ डं मी किय पे म्ह भम व भम न कमा न्हे ह्न

ले. भू. ३७

भिमसूभभिमसूभनेदराघ्टे॥ भ्रदेधूकभिम
लगछ्रियपूकभिलछ्रिधूभीरभउंवभः
इमरटे॥३॥वेहरवसभिभमरमदराघ्रम
गिचेप भूयालगाभिमंभकलेंविमरखाउ॥
विश्वमूनेपिदि… हयामपिलेकवहलः
छ्रिधूभीर॥३॥वहज्ञभउमपिलेंदराउः

देपिङ्पामि दे मिविस्रगामिपरापरामि
॥ रंह्रिवक्षवदगिरधूमलैवमधूलञ्जिधू
मीद ॥ र ॥ क्षरः मापवविवपः मग्लीमव
ह्रैभाहूः मापवत्र ष्क्रपकलाकूलपैः ॥ प
कः श्रमिमजिपभाक्षकलोपलिकेयदप
ऊ्रवस्रकेकमत्रः कलदः ॥ प ॥ यम्भिवे

लं. मैं: ३३

मेः स्तु॰ भदेपस्मधगाणस्त्रमे॰ द्य॰ मरमिद्र
वज्ञलेगादेक्षे॥ रइपउड्डि॰ पमेमयवेप॰
गयंभमीकमेवमकलेउद्मिदम्निमातूउ॥
ग॥ वद्मधुमेवमकलेस्त्रमिउमपेमिवहूक्ष
मेउमापिलेवस्तुमीदलक्षि॥ क्षाभयवइम॰
मभक्रलमेवउइमीविक्षुपद्धिकमलेकम

ला लये मे ॥ १ ॥ लक्ष्मी श्रियं मकमलं कम
ला लयं मपद्मं मनो चलि येयमकं गं मभ
म ॥ श्री रूह भमृउज भकोशिगा विश्व
प्रिया मिद्रि भफलपं कमः पभ ॥ ३ ॥ ८
द्रिभुद्व हना वंशी मद लक्ष्मी दिप्रिय भा ॥
पू नमम पद्मीकः मा ष्णु ऋंम वमृति ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

पारमुद्रवाय ॥ ॥ ॥ यदि ति येवै रेमूदं नयै
गेभ्भियषडदभा ॥ येपा षिष्टूडः मेइंवक्
कृ मक्ष्उमक ॥ उषांकरु मिद्म द्रपेमपु
मास्त्र मनि सिद्धु ॥ ०३ ॥ मासुमाषु विधिपाज्ञवि
ष्ठुटिमाश्चु मव्रंउः ॥ मवड्विलायज्ञामुभा
मुमघ्न सिमकुयः ॥ ०३ ॥ ॥ सीमवाय ॥ ॥

ॐ [illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ॥

[illegible] ॥ ॥ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

शुभम् ॥ ॥ ॥ [illegible] ॥ ॥ ॥ शुभमस्तु ॥

